Subject: **Sociology**

Course: **M. A. Part I**

Paper II

Topic: **Functionalism**

Prepared by ***Prof. Dharmshila Prasad***

Scanned with CamScanner

प्रकार्यवाद
(Functionalism)

प्रकार्यवाद एक प्रचलित सिद्धान्त है। इसके अनुसार समाज की निर्णायक इकाइयाँ अथवा उप-विभाग अपने-अपने निश्चित प्रकार्यों के द्वारा सम्बन्धित रहते हुए सामाजिक व्यवस्था के संगठन में सहयोग देते हैं और इस प्रकार मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति, सांस्कृतिक मूल्यों के अनुसार होती है। इसका कारण यह है कि विभिन्न इकाइयों की स्थितियाँ और कार्य सांस्कृतिक व्यवस्था द्वारा नियमित व प्रभावित होते हैं। प्रकार्यवाद के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने विचार प्रकट किये हैं जिसमें स्पेन्सर, दुर्खेम, ब्राउन, मैलिनोवस्की, मर्टन, पारसन्स, नेडेल, डेविस, स्मेलसर तथा लूमिस आदि के नाम प्रमुख हैं। भारतीय समाजशास्त्रियों में श्रीनिवास, दामले, कारवे, बोपेगोमेज आदि के नाम आते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख विद्वानों के विचारों को प्रस्तुत किया जा रहा है—

स्पेन्सर का प्रकार्यवाद
(Spencer's Functionalism)

हर्बर्ट स्पेन्सर को प्रकार्यवाद का अग्रणी माना जाता है। इनका कारण यह है कि स्पेन्सर ने डार्विन से प्रेरणा लेकर जैविकीय प्रकार्यवाद (Biological functionalism) का विचार सामने रखा और यह बताने का प्रयास किया कि जिस प्रकार एक शारीरिक सावयव (organism) में अनेक इकाइयाँ होती हैं उसी प्रकार सामाजिक सावयव की भी अनेक इकाइयाँ होती हैं और कोई भी सावयविक संरचना स्थिर नहीं होती। अर्थात् उद्विकास की प्रक्रिया में उसमें विभेदीकरण बढ़ता जाता है। जो अंग पहले अस्पष्ट रहता है वह बाद में स्पष्ट होने लगता है।

स्पेन्सर ने इसी सन्दर्भ में 'Evolutionary Functional Process' की बात कही। यानी विभिन्न इकाइयाँ एक-दूसरे के साथ अपना प्रकार्य करती हुई सावयव की व्यवस्था एवं निरन्तरता को बनाये रखती हैं तथा उसके उद्विकास में योगदान देती हैं।

स्पेन्सर का कहना है कि प्रारम्भिक अवस्था में कोई भी सावयव की विभिन्न इकाइयों में निश्चितता, सामंजस्य एवं समरूपता पायी जाती है, किन्तु उद्विकास की प्रक्रिया द्वारा विभेदीकरण बढ़ जाता है। इसके विभिन्न इकाइयों में श्रम-विभाजन तथा विशेषीकरण बढ़ने लगता है। श्रम-विभाजन तथा विशेषीकरण से विभिन्न इकाइयों के बीच अन्तर्सम्बन्ध और अन्तर्निर्भरता बढ़ती है। स्पेन्सर ने यह भी बताया कि सावयव जितना ही उच्च स्तर का होता जायेगा उतना ही उसमें अन्तर्निर्भरता पाई जायेगी।

स्पेन्सर ने इसके द्वारा समाज में प्रकार्यवाद की धारणा को विकसित किया। जैसे-जैसे उद्विकास होता है, वैसे-वैसे प्रकार्यों में एकीकरण (Integration) बढ़ता

Scanned with CamScanner

है। इससे एक ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है, जब एक ही इकाई अनेक प्रकार्यों को ग्रहण करती है। परिणामस्वरूप इकाइयों के प्रकार्यों में संघर्ष तथा नियमहीनता (Anomie) की स्थिति उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है। इस सावयव में व्यवस्था एवं निरन्तरता तभी विद्यमान रह सकती है, जबकि प्रकार्यों में बहुलता होने पर भी संघर्ष की स्थिति उत्पन्न न हो तथा विभिन्न इकाइयों में प्रकार्यों का एकीकरण, सामंजस्य तथा समन्वय बना रहे।

ब्राउन का प्रकार्यवाद (Brown's Functionalism)—अपनी पुस्तक 'Structure and Function in a Primitive Society' में ब्राउन ने प्रकार्यवाद के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किए हैं। इन्होंने अपनी विचारधारा को दुर्खेम के प्रकार्यवाद की विचारधारा से सम्बन्धित किया। दुर्खेम ने समाज को एक जीवधारी के समान बताया और ब्राउन ने भी सामाजिक जीवन की तुलना शारीरिक जीवन से की है। किन्तु ब्राउन ने दुर्खेम के सामाजिक सावयव की 'आवश्यकताओं' के स्थान पर 'अस्तित्व के लिए आवश्यक दशाओं' के प्रयोग का सुझाव दिया। उन्होंने बताया कि सामाजिक सावयव की निरन्तरता इसपर निर्भर करती है कि उसकी संरचना उसके लिए कितना प्रकार्य करती है।

ब्राउन के प्रकार्यवाद के सिद्धांत का एक दूसरा पहलू यह है कि किसी भी सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत प्रकार्यात्मक एकता होती है। प्रकार्यात्मक एकता एक ऐसी दशा है जिसमें समाज-व्यवस्था के सभी अंग साथ-साथ कार्य करते हैं तथा उनमें परस्पर निर्भरता भी होती है। इस प्रकार समाज का संगठन विभिन्न निर्णायक इकाइयों के प्रकार्यात्मक संतुलन पर निर्भर करता है। लेकिन जब कभी सामाजिक इकाइयों के प्रकार्य अकारण बदल जाते हैं तब सामाजिक संरचना में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस होने लगती है।

मैलिनोवस्की का प्रकार्यवाद
(Malinowski's Functionalism)

ब्राउन की तरह मैलिनोवस्की ने भी प्रकार्यवाद की धारणा को विकसित करने का प्रयास किया। मानवशास्त्र में इनका योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। मैलिनोवस्की ने प्रकार्यवाद की व्याख्या सांस्कृतिक सन्दर्भ में की है। प्रत्येक संस्कृति में कुछ व्यवहार प्रणालियाँ (Standardized practices) और और विश्वास (Belief) होते हैं जो सम्पूर्ण संस्कृति के लिए प्रकार्यात्मक होते हैं। ये प्रत्येक सदस्य के लिए भी प्रकार्यात्मक होते हैं।

संस्कृति की वास्तविक इकाइयाँ संस्थायें हैं, जो किसी आवश्यकता के चारों तरफ की जाने वाली क्रियाओं के एक समूह के समान होती हैं तथा किसी क्रिया को पूरा करने के लिए संगठित होती हैं।

मनुष्य की आवश्यकतायें अनेक हैं जिनकी पूर्ति के लिए वह भौतिक या अभौतिक वस्तुओं (जिसे संस्कृति कहते हैं) का सहारा लेता है। संस्कृति की इकाई का किसी-न-किसी रूप में कोई-न-कोई प्रकार्य अवश्य होता है। मानव की किसी-न-किसी आवश्यकता के कारण ही संस्कृति की विभिन्न इकाइयों का उद्भव होता है। संस्कृति की प्रत्येक इकाई का परस्पर प्रकार्यात्मक सम्बन्ध होता है। इसका कारण यह है कि मानव की आवश्यकतायें एक-दूसरे से सम्बन्धित होती हैं। इस

Scanned with CamScanner

अन्त:सम्बन्ध का आधार मानव की प्राणीशास्त्रीय प्रेरणायें और आवश्यकतायें हैं। किसी भी संस्कृति के संगठन का उद्देश्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए साधन प्रस्तुत करना है।

इस प्रकार मैलिनोवस्की का विश्वास है कि संस्कृति का ऐसा कोई भी तत्त्व नहीं है जिसका कुछ-न-कुछ प्रकार्य न हो। सम्पूर्ण व्यवस्था में जबतक उसका प्रकार्य रहता है तभी तक उसका अस्तित्व भी बना रहता है। जीवन व्यवस्था को बनाये रखने के लिए प्रत्येक सांस्कृतिक तत्त्व का कुछ प्रकार्य रहता है इसलिए संस्कृति के प्रत्येक तत्त्व का दूसरे के साथ आन्तरिक व प्रकार्यात्मक सम्बन्ध होता है जिसे अलग नहीं किया जा सकता। ये सब मिलकर संस्कृति को एक समग्रता प्रदान करते हैं।

आलोचना : रोबर्ट लोवी (Robert Lowie) ने मैलिनोवस्की के प्रकार्यवाद की आलोचना की है। उनका कहना है कि मैलिनोवस्की ने संस्कृति को एक बन्द व्यवस्था मान लिया है, जिसमें संस्कृति के विभिन्न तत्त्व शारीरिक आवश्यकताओं की प्रतिक्रिया मात्र होते हैं। रेमण्ड फर्थ (Raymond Firth) ने मैलिनोवस्की और ब्राउन के प्रकार्यवाद की तुलना करते हुए बताया कि मैलिनोवस्की का प्रकार्यवाद ब्राउन से श्रेष्ठ है। दोनों के प्रकार्यवाद का आधारभूत अन्तर यह है कि मैलिनोवस्की ने सांस्कृतिक तत्त्वों के कार्यों में 'व्यक्ति' के अस्तित्व पर बल दिया है तो ब्राउन ने 'समाज' के अस्तित्व को प्रधानता दी है।

मर्टन का प्रकार्यवादी विश्लेषण
(Mertions' Functional Analysis)

मर्टन ने पहले के प्रचलित प्रकार्यात्मक विश्लेषण से सम्बन्धित तीनों मान्यताओं का खण्डन किया तथा यह बताने का प्रयास किया कि ये स्वयंसिद्ध प्रमाण सीमित हैं।

प्रकार्यात्मक विश्लेषण से सम्बन्धित मान्यतायें
(Postulates in Functional Analysis)

1. समाज में प्रकार्यात्मक एकता सम्बन्धी मान्यता (Postulate of Functional unity of Society)—रेडक्लिफ ब्राउन ने इसकी मान्यता को स्पष्ट करते हुए बताया कि सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए किसी भी सामाजिक रीति-रिवाज का कार्य वह योग है, जो अपनी क्रिया द्वारा सम्पूर्ण सामाजिक जीवन को देती है। मैलिनोवस्की के अनुसार ब्राउन ने आदिम समाज की सामाजिक एकता को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर समझाने का प्रयत्न किया और व्यक्ति के महत्त्व को बहुत कम स्थान दिया है। मैलिनोवस्की ने प्रकार्यात्मक एकता को बतलाने के लिए उन प्रमाणित व्यवहारों और विश्वासों की जिक्र किया, जो सम्पूर्ण संस्कृति के लिए प्रकार्यात्मक होते हैं।

यह बात संदेहात्मक है कि मानव समाज में सम्पूर्ण प्रकार्यात्मक एकता पायी जाती है, क्योंकि 'Social usage' अथवा 'Sentiments' कुछ समूहों के लिए प्रकार्यात्मक हो सकते हैं तो कुछ समूहों के लिए अकार्यात्मक। इसलिए मर्टन ने प्रकार्यात्मक एकता को तथ्यों के विपरीत बताया।

कुछ विद्वानों ने प्रकार्यात्मक एकता को धर्म के द्वारा समझाने का प्रयत्न किया है और बताया कि धर्म के द्वारा समाज में विभिन्न तत्त्वों का समन्वय उत्पन्न होता

Scanned with CamScanner

है जैसा कि दुर्खेम तथा मैक्स-वेबर ने अपने अध्ययनों द्वारा सिद्ध करने का प्रयास किया है। इसका दोष यह है कि ये सभी अध्ययन पिछड़े हुए समाजों में किये गये हैं। अतः इन्हें उन्नत तथा आधुनिक समाजों में लागू नहीं किया जा सकता। इसके अतिरिक्त विद्वानों ने केवल धर्म के समन्वय तथा संगठित करने वाले तत्त्वों का ही अध्ययन किया है। उन तत्त्वों का नहीं किया जो अव्यवस्था या विघटन करने वाले हैं। इस प्रकार मर्टन ने मूल रूप से समाज में प्रकार्यात्मक एकता की मान्यता को सत्य मानने से इनकार किया।

2 प्रकार्यवाद की सर्वव्यापी मान्यता (Postulate of universal Functionalism)—इस मान्यता के अनुसार सभी सामाजिक सांस्कृतिक व्यवहारों के प्रतिमानों के निश्चित प्रकार्य होते हैं। मैलिनोवस्की ने इस विचारधारा का काफी समर्थन किया। किन्तु मर्टन ने यह आपत्ति की कि मान्यता को व्यक्त करने वाले सिद्धांत उन सांस्कृतिक एवं सामाजिक व्यवहारों पर विचार नहीं करते जो प्रकार्यात्मक नहीं हैं।

3. अपरिहार्यता की मान्यता (Postulate of Indispensability)—प्रकार्यवाद की तीसरी मान्यता को सबसे अधिक अस्पष्ट व गलत बताया गया है। मैलिनोवस्की ने कहा कि 'सभ्यता के प्रत्येक प्रकार, प्रत्येक प्रथा, प्रत्येक भौतिक वस्तु, प्रत्येक विचार एवं विश्वास का कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकार्य होता है। इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि वे प्रकार्य की अनिवार्यता बता रहे हैं या किसी वस्तु की आवश्यकता या दोनों की। इस मान्यता में दो बातें निहित हैं : (i) यह मानलिया गया है कि कुछ प्रकार्य हैं जिनको नहीं किया जाय तो समाज नहीं चल सकता (ii) यदि यह माना जाता है कि कुछ प्रकार्य ऐसे हैं जो दूसरे प्रकार्य की पूर्ति के लिए आवश्यक हैं तो इसका अर्थ यह होगा कि प्रकार्य में विकल्प (alternatives) सम्भव हैं, यानी एक प्रकार्य को दूसरा कर सकता है। मर्टन ने दोनों के आधार पर तीसरी बात कही जिसे **प्रकार्यात्मक विकल्प** (Functional Alternatives या Functional equivalents या Functional substitutes) का नाम दिया। पारसन्स ने भी functional equivalents' का प्रयोग किया है।

मर्टन का प्रकार्यवाद (Merton's Functionalism)—अमेरिकन समाजशास्त्री मर्टन (R. K Merton) ने अपनी पुस्तक 'Social Theory and Social Structure' में प्रकार्यवाद का विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने प्रकार्यवादी विचारों की व्याख्या करते हुए चार प्रमुख अवधारणाओं को विकसित किया—**प्रकार्य, अकार्य, प्रकट तथा अप्रकट प्रकार्य।**

(i) **प्रकार्य** वे प्रत्यक्ष परिणाम हैं जो किसी सामाजिक व्यवस्था में अनुकूलन अथवा समायोजन करने में सहायक होते हैं।

(ii) **अकार्य** वे प्रत्यक्ष परिणाम हैं जो अनुकूलन अथवा समायोजन को कम करते हैं।

(iii) **प्रकट प्रकार्य** वे अवलोकित परिणाम होते हैं जो व्यवस्था के लिए समायोजन तथा अनुकूलन में सहायता करते हैं तथा जिन्हें व्यवस्था में भाग लेने वाले सदस्य स्वीकार करते हैं और जिन्हें जानबूझ कर किया जाता है।

(iv) **अप्रकट प्रकार्य** वे परिणाम होते हैं जो न तो वांछित होते हैं और न ही सदस्यों द्वारा स्वीकृत हैं।

Scanned with CamScanner

समाज के अन्तर्गत अनेक इकाई या तत्त्व होते हैं जो सामाजिक व्यवस्था व संगठन को बनाये रखने के लिए कार्य करते हैं, किन्तु कुछ ऐसे भी तत्त्व हैं जो नहीं करते। ये तत्त्व या इकाइयाँ सामाजिक व्यवस्था को ठेस भी पहुँचाते हैं। इससे सामाजिक व्यवस्था या संगठन की कार्य-कुशलता में बाधा उत्पन्न होती है या कुछ-न-कुछ विघटन, असंतुलन अथवा असामंजस्य उत्पन्न हो जाता है। जो सामाजिक तत्त्व पूर्व निर्धारित पद या कार्य के प्रतिकूल कार्य करे उसे अकार्य कहा जाता है।

मर्टन ने प्रकार्य तथा अकार्य में अन्तर निम्नलिखित बातों के आधार पर किया—

(i) प्रकार्यात्मक एकता (Functional unity) वास्तव में प्रायोगिक (empirical) है।

(ii) सामाजिक रीतियाँ तथा घटनायें एक समूह के लिए प्रकार्यात्मक हो सकती हैं तो दूसरे के लिए अकार्यात्मक भी हो सकती हैं।

(iii) सार्वभौमिक प्रकार्यवाद (Universal Functionalism) की धारणा में संशोधन होना चाहिए क्योंकि यह जरूरी नहीं है कि एक समाज या समूह में जो प्रकार्यात्मक परिणाम (functional consequences) हों वह दूसरे सभी समाजों तथा समूहों में लागू हों।

(iv) प्रकार्यवाद की यह मान्यता रही है कि कोई भी तत्त्व या इकाई प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण से अपरिहार्य (Inevitable) होती है। किन्तु मर्टन के अनुसार एक ही इकाई के एक से अधिक प्रकार्य हो सकते हैं तथा एक ही प्रकार्य की पूर्ति अन्य वैकल्पिक प्रकार्य (Functional Alternatives) द्वारा भी हो सकती है।

मर्टन ने प्रकार्य तथा अकार्य के साथ-साथ गैर-प्रकार्य (Non-function) की धारणा दी है। कुछ ऐसी संरचनायें भी होती हैं अथवा संरचनाओं के ऐसे परिणाम भी होते हैं जो समाज व्यवस्था के सन्दर्भ में न तो सकारात्मक होते हैं और न ही नकारात्मक। अर्थात् वे न तो समाज-व्यवस्था की स्थिरता को बढ़ाते हैं और न ही इस स्थिरता को कम करते हैं। ऐसे परिणाम गैर-प्रकार्य (Non-function) कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत समाज से वैसे नियम आते हैं, जो व्यक्ति अथवा समूहों के सम्बन्धों को बतलाते हैं अथवा उनका परिचय देते हैं। इनके चलते समाज न तो सुदृढ़ होता है और न कमजोर।

मर्टन ने अकार्य की चर्चा करते हुए बताया कि ब्राउन ने सिर्फ व्यवस्था भंग करने वाले परिणामों को अकार्य कहा तथा इन्हें नकारात्मक परिणाम भी बताया। मर्टन के अनुसार अकार्य नकारात्मक भी हो सकते हैं और सकारात्मक भी। अकार्य सामाजिक परिवर्तनों को सरल बनाते हैं, ऐसा भी सम्भव है कि इससे लम्बे अर्से के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आवें।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि मर्टन ने प्रकार्य तथा अकार्य में अन्तर बताकर प्रकार्यात्मक विश्लेषण में एक विशेष कड़ी जोड़ी है।

मर्टन ने बताया कि आरम्भिक प्रकार्यवादियों ने व्यवहारों के केवल उन्हीं परिणामों पर ध्यान दिया, जो प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होते थे। उन्होंने वैसे परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत नहीं किया जो अप्रत्यक्ष व छिपे रहते हैं। उनके अनुसार छिपे परिणामों का सामाजिक व्यवस्था पर कम महत्त्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता। समाज-

Scanned with CamScanner

शास्त्र में इन दोनों प्रकार्यों का बहुत अधिक महत्त्व है। सामाजिक व्यवस्था में अनेक ऐसे रीति-रिवाज तथा व्यवहार प्रणालियाँ हैं जिनको ऊपरी तौर पर विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाला जाता है। किन्तु साधारण तौर पर ऐसे रीति-रिवाजों के अप्रकट व अंतर्निहित परिणामों पर ध्यान नहीं देते जबकि वे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होते हैं व हो सकते हैं।

प्रकार्य के समान अकार्य भी दो प्रकार के होते हैं—प्रकट और अप्रकट। आंशिक संरचना के ऐसे परिणाम जो समाज व्यवस्था अथवा उप-व्यवस्था के स्थायित्व एवं सामंजस्य को ठेस पहुँचाते हैं तथा जिसे लोग जानते हैं और उसकी अपेक्षा भी करते हैं वे **प्रकट अप्रकार्य** (Manifest dysfunction) कहलाते हैं। जैसे जनजातीय समाज में युवतियों के लिए युवकों में प्रतियोगिता होती है। जो युवक प्रतियोगिता में विफल होते हैं वे झगड़ा एवं मार-पीट करने लगते हैं या इसकी सम्भावना बनी रहती है। इस स्थिति का अनुमान लोग पहले से करते हैं तथा उनपर काबू पाने के लिए बड़े-बूढ़े तथा मुखिया आदि उपस्थित रहते हैं। आंशिक संरचना के समाज व्यवस्था अथवा उप-व्यवस्था के सन्दर्भ में ऐसे नकारात्मक परिणाम जिनके बारे में लोग पूर्वानुमान नहीं करते हैं तथा अनभिज्ञ होते हैं, **अप्रकट अकार्य** (Latent dysfunction) कहलाते हैं।

इस प्रकार प्रकार्यवाद के क्षेत्र में मर्टन ने अपना योगदान देकर एक अनोखा स्थान बनाया।

पारसन्स का प्रकार्यवाद (Parsons's Functionalism) – पारसन्स ने 1951 में अपनी पुस्तक 'The Social System' में प्रकार्यवादी सिद्धान्त (Functionalistic theory) का विस्तार पूर्वक विश्लेषण किया। उन्होंने अपने प्रकार्यवादी सिद्धांत मे मैलिनोवस्की, पैरेटो तथा दुर्खेम के भी विचारों को अपनाया। पारसन्स ने व्यक्तित्व की आवश्यकताओं का सामाजिक व्यवस्था में परिवर्त्य (Variables) के रूप में प्रयोग किया। उन्होंने कहा कि व्यावसायिक नियमों में व्यवसायों के कुछ विशेष प्रकार्य होते हैं जो व्यवसाय में घुसने की दशाओं को निर्धारित करते हैं। उस व्यवसाय की सीमा को बताते हैं तथा उसमें काम करने वाले सदस्यों के अधिकारों तथा कर्त्तव्यों को परिभाषित करते हैं इत्यादि। इसके अतिरिक्त वे नियम एक व्यावसायिक व्यक्ति तथा उसके ग्राहक के बीच के अन्तःसम्बन्धों को सुविधाजनक बनाते हैं।

पारसन्स ने अपनी प्रकार्यवादी सिद्धान्त को सभी सामाजिक व्यवस्थाओं के सन्दर्भ में विकास करने का प्रयास किया है। उनके अनुसार कोई भी व्यवस्था दूसरी व्यवस्थाओं से अन्तःसम्बन्धित होती है। कुछ दशायें किसी भी व्यवस्था को चलाने के लिए आवश्यक होती हैं। इन दशाओं को पारसन्स ने 'प्रकार्यवादी आवश्यकतायें (Functional requisites) कहा है। प्रकार्यवादी आवश्यकताओं (Functional requisites) का सम्बन्ध सिर्फ सामाजिक व्यवस्था से ही नहीं होता, बल्कि सदस्यों के व्यक्तित्व से भी होता है। पारसन्स के अनुसार किसी भी सामाजिक व्यवस्था को अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए अपने सदस्यों की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करनी पड़ती है। प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था समाजीकरण के द्वारा नयी पीढ़ी को समाजीकृत करती है ताकि ये अपने अनुरूप अपनी सामान्य आवश्यकताओं को विकसित कर सके।

Scanned with CamScanner

पारसन्स ने अपनी प्रकार्यवादी व्याख्या को व्यवस्था विश्लेषण (System Analysis) के आधार पर विकसित किया। उनका कहना है कि प्रकार्यवादी सिद्धांत में व्यवस्था का महत्त्व इसलिए है कि किसी भी प्रतिमान को तबतक ठीक से नहीं समझा जा सकता, जबतक कि उसे सम्पूर्ण व्यवस्था के सन्दर्भ में समझने का प्रयत्न नहीं किया जाय। यही कारण है कि पारसन्स ने सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्थाओं की संपूर्ण संरचनाओं की विवेचना करने का प्रयत्न किया है ताकि उसके अलग-अलग तत्त्वों तथा उनके बीच पाये जाने वाले संबन्ध स्पष्ट हो सके।

कोई भी प्रक्रिया या दशायें जो व्यवस्था को बनाये रखने में योगदान देती हैं, प्रकार्यात्मक होती हैं। इसी प्रकार जो प्रक्रिया या दशायें व्यवस्था को बनाये रखने में योगदान नहीं देतीं, अकार्यात्मक होती हैं। जिन दशाओं एवं प्रक्रियाओं का संपूर्ण व्यवस्था से प्रकार्यात्मक संबन्ध होता है वे संपूर्ण व्यवस्था को चलाने में सहायक होती हैं।

नेडेल का प्रकार्यवाद (Nadel's Functionalism)-- नेडेल ने प्रकार्यवाद की व्याख्या संरचना (Structure) के रूप में की है। उन्होंने समाज को संस्कृति के रूप में या व्यवस्था के रूप में न देकर क्रमबद्धता के रूप में देखा। नेडेल के अनुसार किसी भी समाज को समझने के लिए उसकी संरचना को समझना जरूरी है। समाज के विभिन्न अंगों में परिवर्तन हो सकता है पर उसकी संरचना में निरन्तरता, नियमितता तथा अपरिवर्तनशीलता बनी रहती है। नेडेल के प्रकार्यवाद का अभिप्राय समाज में उस व्यवस्था अथवा निरन्तरता से है जो समाज के विभिन्न अंगों में परिवर्तन आने के बाद भी बनी रहती है।

नेडेल के अनुसार सामाजिक संरचना और इसके अन्दर निहित प्रकार्य को सम्बन्धों की निरन्तरता एवं नियमितता के रूप में भी समझा जा सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि विभिन्न सदस्यों के बीच पाये जाने वाले सम्बन्धों में परिवर्तन आ जाये, यह भी हो सकता है कि सम्बन्धों की अभिव्यक्तियों में परिवर्तन आ जाये, लेकिन सम्बन्धों की नियमितता तथा क्रमबद्धता में आसानी से परिवर्तन नहीं आता। अतएव सम्बन्धों की यही नियमिता एवं निरन्तरता सामाजिक संरचना की नियमितता और निरन्तरता को बनाये रखने का प्रकार्य करती है।

प्रकार्यवाद की आलोचना
(Criticism of Functionalism)

वर्तमान समय में प्रकार्यवाद का प्रतिनिधित्व करने वालों में मर्टन, पारसन्स तथा डेविस का नाम प्रमुख है। इनके विचारों के सार तत्त्व पर ध्यान दें तो प्रकार्यवाद की सात प्रमुख विशेषतायें स्पष्ट होती हैं—

(i) सभी समाज सम्पूर्ण रूप में विभिन्न अन्तर्सम्बन्धित अंगों की व्यवस्था है।

(ii) समाज में जो कार्य-कारण (Causation) पाया जाता है वह बहुमुखी (Multiple) तथा पारस्परिक होता है।

(iii) एकीकरण (Integration) कभी भी पूर्ण नहीं होता। फिर भी सामाजिक व्यवस्थायें मूलरूप से एक गतिशील सन्तुलन की अवस्था में होती हैं।

(iv) अकार्य, तनाव (Tension) तथा विचलन (Deviance) वास्तव में समाज में लम्बे समय तक विद्यमान होते हैं, लेकिन इसी समय में उनमें संस्थागत हो जाने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

Scanned with CamScanner

(v) परिवर्तन प्रायः धीरे-धीरे तथा समायोजित रूप में हुआ करते हैं क्रान्तिकारी रूप में नहीं। जो परिवर्तन भयानक होते हैं वे सामाजिक संरचना के ऊपरी भाग को प्रभावित करते हैं, अन्दर नहीं।

(vi) परिवर्तन तीन कारणों से होता है :—

(क) सामाजिक व्यवस्था का बाह्य परिवर्तनों से समायोजन।

(ख) संरचना तथा प्रकार्यात्मक विभेदीकरण विकास द्वारा।

(ग) समाज के समूहों अथवा सदस्यों द्वारा आविष्कारों तथा अन्वेषणों द्वारा।

(vii) सामाजिक एकीकरण के लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य मतैक्यता है।

किंगस्ले डेविस (Kingsley Davis) ने प्रकार्यवाद के सम्बन्ध में उत्पन्न दोषों एवं शंकाओं को निम्नलिखित ढंग से व्यक्त किया है :—

1. प्रमाण तथा प्रकार्यात्मक विश्लेषण (Evidence and Functional analysis) में सिद्धांत हैं और श्रेणियाँ भी हैं, किन्तु इसको सही मानने के प्रमाण नहीं हैं।

2. मर्टन ने प्रकार्यवाद की तीनों प्रमुख विशेषताओं का जिक्र किया—

(a) प्रकार्यात्मक एकता (Functional unity) (b) सार्वभौमिकता (Universal Functionalism) (c) अपरिहार्यता (Indispensability or inavitability) मर्टन की ये तीनों विशेषतायें अमूर्त हैं और इनका कोई समाजशास्त्रीय महत्त्व नहीं है।

3. आलोचकों का कहना है कि प्रकार्यवाद सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या करने में समर्थ नहीं है।

4 प्रकार्यवादी पद्धति में कार्य-कारण व्याख्या (Causal analysis) नहीं होती जो अन्य वैज्ञानिक पद्धतियों में की जाती है।

5 प्रकार्यवाद के द्वारा निश्चित नियमों की रचना सम्भव नहीं है, क्योंकि सामाजिक क्रिया गत्यात्मक (Dynamic) होती है।

आधुनिक समय में प्रकार्यवाद एक महत्त्वपूर्ण एवं लोकप्रिय पद्धति स्वीकार की गई है, क्योंकि कोई दूसरा विकल्प अभी समाजशास्त्रियों के पास नहीं आ सका है। प्रकार्यवाद में रूढ़िवादिता की झलक दिखाई नहीं पड़ती, बल्कि सामाजिक संरचना का यह एक उदारवादी सिद्धांत सिद्ध हो रहा है।

Scanned with CamScanner